अध्याय 4

गुप्त काल

गुप्तवंश

गुप्तवंश का राज्यकाल भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से विख्यात है। कला और संस्कृति इस युग में अपनी चरम सीमा पर थी। इस वंश के प्रतापी राजा समुद्र गुप्त ने मध्यप्रदेश और दक्षिण पथ के राजाओं पर विजय प्राप्त की। इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख में अंकित है कि समुद्र गुप्त रीवा होते हुए दक्षिण कौशल प्रदेश में प्रविष्ट हुआ। दक्षिण कोशल अर्थात् आधुनिक छत्तीसगढ़ के उत्तरी क्षेत्र में, बैतूल, नर्मदा व उत्तर के अधिकांश क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। उत्तरी कोशल का राजा महेन्द्र था। इसके बाद उसने दक्षिण कोशल के राजा व्याघ्रराज को पराजित किया। जिन अठारह प्रदेशों को समुद्रगुप्त ने अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया, उनमें डहाल अथवा चेदि देश, जिसकी राजधानी त्रिपुरी थी, भी एक था। त्रिपुरी अब तेबर के नाम से जानी जाती है और जबलपुर के निकट स्थित है।

समुद्र गुप्त ने विदिशा से एरण तक का क्षेत्र अपने कब्जे में कर लिया था। एरण के एक शिलालेख में समुद्र गुप्त के नाम का उल्लेख है। समुद्रगुप्त के पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय ने मालवा पर अधिकार किया एवं गुप्त साम्राज्य की सीमा पश्चिम में अरब सागर तक पहुँचा दी। चन्द्रगुप्त द्वितीय को 'विक्रमादित्य' की उपाधि मिली।

चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल में हूणों के बर्बर आक्रमण प्रारम्भ हो गए। हूण मध्य एशिया की बर्बर जाति थी और उस काल में मानव जाति की सबसे बड़ी शत्रु आँकी जाती थी। स्कंधगुप्त ने हूणों को करारी मात दी और गुप्त साम्राज्य को नष्ट होने से बचा लिया। कुमार गुप्त द्वितीय के समय के मंदसौर के लेख से ज्ञात होता है कि मालवा के सुप्रसिद्ध नगर दशपुर में भव्य सूर्य मंदिर (दीप्त रश्मि भवन) था जिसका शिखर रात्रि में चंद्रमा के प्रकाश से चमकता था। गुप्तों ने उदयगिरी (विदिशा के निकट) की विश्वप्रसिद्ध गुफा और तिगवा के मंदिरों का (जबलपुर के निकट) निर्माण कराया।

उदयगिरि की गुफा

गुप्त काल के वैभव का उल्लेख उनके शिलालेखों व उस समय की प्रसिद्ध कृति मृच्छकटिकम व मेघदूत में मिलता है। इनमें गुप्त समय के नगर अत्यन्त समृद्धशाली बताए गए हैं। इस ग्रंथ में उज्जयिनी के नागरिकों के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का सजीव वर्णन है। उज्जयिनी का वर्णन कालीदास के मेघदूत में भी अनेक स्थानों पर है।

महिष्मति के कलचुरि

छठी शताब्दी ई. में हैहय वंश के कलचुरि राजाओं का उदय हुआ। उनकी राजधानी निमाड़ क्षेत्र में महिष्मति थी। गुजरात, खानदेश और मालवा का बड़ा क्षेत्र उनकी राज्य के अंतर्गत था। इस वंश के तीन राजाओं के नाम ज्ञात हैं— कृष्णराज, शंकरगना तथा बुद्ध राज।

हर्षवर्द्धन

सातवीं शताब्दी में लगभग सम्पूर्ण उत्तरभारत वर्धन वंश के अधिकार में था। हर्षवर्द्धन का राज्य हिमालय से लेकर नर्मदा तक फैला था। नर्मदा के दक्षिण के क्षेत्र पर चालुक्य राजाओं का राज्य था। इसका अर्थ है कि मध्यप्रदेश मुख्यत: इस समय दो राजवंशों के अधिकार में था। उत्तर में वर्धन वंश और दक्षिण में चालुक्य वंश।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

प्रश्न-1 गुप्त वंश का राज्यकाल भारतीय इतिहास में .....के नाम से विख्यात है।

प्रश्न-2 चन्द्रगुप्त द्वितीय को .....की उपाधि मिली।

प्रश्न-2 लघुत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न-1 गुप्त वंश के शासकों ने मध्यप्रदेश के किन क्षेत्रों में शासन किया?

प्रश्न-2 गुप्त काल के मध्यप्रदेश में कौन-कौन से निर्माण कार्य किए गए?

प्रश्न-3 इस काल की प्रसिद्ध साहित्य कृतियाँ कौन-सी थी?

प्रश्न-4 उज्जयिनी का वर्णन किसमें प्राप्त हुआ?

प्रश्न-5 महिष्मति के कलचुरियों की राजधानी क्या थी?